हरिहर काका

लेखक परिचय: मिथिलेश्वर

मिथिलेश्वर का जन्म 31 दिसंबर 1950 को बिहार के भोजपुर जिले के वैसाडीह गाँव में हुआ। हिंदी में पी.एच.डी. करने के बाद आप ने अध्यापन के क्षेत्र को चुना। अभी आप आरा विश्वविद्यालय में रीडर के पद पर नियुक्त हैं।

मिथिलेश्वर ने अपनी कहानियों में ग्रामीण जीवन को खूबसूरती से उकेरा है। आपकी कहानियों में वर्तमान ग्रामीण जीवन का अंतर्विरोध भी सामने आता है। आजादी के बाद ग्रामीण जीवन बहुत जटिल और भयानक हो गया है। बदलाव के नाम पर आम लोगों का शोषण हो रहा है। आपको अपने लेखन के लिए सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार के साथ-साथ अन्य कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है।

पाठ परिचय: हरिहर काका

हरिहर काका और लेखक का संबंध : हरिहर काका का लेखक से गहरा संबंध था। लेखक हरिहर काका के पड़ोस में रहता था। लेखक जब बच्चे थे, हरिहर काका उसे पुत्र की तरह स्नेह करते थे। लेखक के बड़े होने पर हरिहर काका का यह स्नेह दोस्ती में बदल गया। हरिहर काका लेखक के पहले दोस्त थे।

गाँव की ठाकुरबारी : हरिहर काका का गाँव आरा कस्बे से चालीस किलोमीटर दूर था। गाँव में तीन प्रमुख स्थान थे। गाँव के पश्चिम का तालाब, मध्य का एक पुराना बरगद का वृक्ष तथा गाँव के पूर्व में स्थित ठाकुर जी का मंदिर, जिसे सब ठाकुरबारी कहते थे।

गाँव की ठाकुरबारी कब बनी, इस विषय में ठीक जानकारी किसी को नहीं है। कहते हैं एक संत इस स्थान पर झोंपड़ी बनाकर रहते थे। सुबह-शाम यहाँ ठाकुर जी की पूजा करते। कुछ गाँव वालों ने यहाँ ठाकुर जी का छोटा-सा मंदिर बना दिया। धीरे-धीरे गाँव की आबादी बढ़ने लगी। साथ ही साथ ठाकुरबारी का भी विस्तार होता गया। लोग तरह-तरह की ठाकुर जी को मनौती मनाते। मनौती माँगने पर किसी का पुत्र हुआ, किसी के पुत्र को नौकरी मिल गई तथा किसी की लड़की की शादी हो गई आदि। लोग खुश होकर ठाकुर जी को रुपए, पैसे, ज़ेवर, अनाज आदि चढ़ाते। कोई-कोई अपने खेत का छोटा टुकड़ा ठाकुरबारी के नाम लिख देता। गाँव के अन्य चीज़ों की तुलना में ठाकुरबारी का विस्तार हजार गुना अधिक हुआ।

ठाकुरबारी के पास बीस बीघे खेत थे। ठाकुरबारी के संचालन के लिए प्रत्येक तीन साल में एक महंत और एक पुजारी नियुक्त किया जाता।

ठाकुरबारी के प्रति लोगों में अपार श्रद्धा थी। किसी भी त्योहार, व्रत, उत्सव आदि के अवसर पर लोग ठाकुरबारी में खूब चढ़ावा चढ़ाते थे। खेत की फसल उतरते ही ठाकुरबारी के लिए भी अनाज निकाला जाता। ठाकुरबारी के भजन, कीर्तन, प्रवचन आदि में भाग लेकर लोग अपने आप को धन्य समझते थे। लेखक को ठाकुरबारी के साधु-संत फूटी आँखों नहीं सुहाते थे।

हरिहर काका का पारिवारिक परिचय : हरिहर काका चार भाई थे। हरिहर काका का नंबर दूसरा था। उनके सभी भाइयों की शादी हो गई थी। उन सब के बाल-बच्चे थे। दो भाइयों के दो लड़कों की शादी हो चुकी थी। उनमें से एक पढ़ लिखकर शहर में क्लर्क था। हरिहर काका के कोई संतान नहीं थी। संतान के लिए हरिहर काका ने दो शादियाँ की थी। दोनों पत्नियां स्वर्ग सिधार चुकी थी। हरिहर काका के परिवार के पास साठ बीघा जमीन थी। प्रत्येक भाई के हिस्से पंद्रह बीघे जमीन थी।

हरिहर काका के भाइयों ने अपनी पत्नियों से कहा कि हरिहर काका की अच्छी तरह सेवा की जाए। कुछ दिन तो उन्होंने हरिहर काका का ध्यान रखा, परंतु बाद में सब बदल गया। हरिहर काका को रूखा सूखा खाने को मिलता। बीमार होने पर कोई उनकी देखभाल नहीं करता। उन्हें अपनी जरूरतें स्वयं पूरी करनी पड़ती।

एक बार हरिहर काका के क्लर्क भतीजे का मित्र गाँव आया। उसके लिए घर में तरह-तरह के व्यंजन बने। हरिहर काका को लगा आज उन्हें भी अच्छा खाना मिलेगा। घर के सभी लोगों ने खाना खा लिया। भाई भी खाना खाकर खेत चले गए। हरिहर काका को किसी ने नहीं बुलाया। हरिहर काका जब खाना खाने पहुँचे, तो उन्हें फिर वही रूखा सूखा परोसा गया। हरिहर काका को गुस्सा आ गया। उन्होंने खाने की थाली उठाकर आँगन में फेंक दी। घर वालों को बुरा भला कहा।

हरिहर काका को महंत का बहलाना : हरिहर काका ने जब खाने की थाली फैंकी, उस समय मंदिर का पुजारी वहीं था। उसने इस घटना का वर्णन महंत से किया। महंत उसी समय तैयार होकर हरिहर काका के घर की तरफ चल दिया। हरिहर काका उन्हें मार्ग में ही मिल गए। महंत हरिहर काका को ठाकुरबारी ले आया। महंत हरिहर काका को बहलाने फुसलाने लगा। कहने लगा उसे अपनी जमीन ठाकुरबारी के नाम कर देनी चाहिए, उन्हें बैकुंठ प्राप्त होगा। हरिहर काका अपनी सारी जिंदगी ठाकुरबारी में बिता सकते हैं। उनकी खूब सेवा होगी। ठाकुरबारी को जमीन देकर वह अपना यह लोक व परलोक दोनों सुधार सकते हैं। अगर वे अपनी जमीन ठाकुरबारी को दे देते हैं, तो उन्हें पुश्तों तक लोग याद रखेंगे।

पुजारी ने हरिहर काका के आराम की व्यवस्था एक साफ-सुथरे कमरे में की शाम को जब हरिहर काका के भाई वापस आए, तो उन्हें दुर्घटना का पता चला। उन्होंने अपनी पत्नियों को बहुत डाँटा और हरिहर काका को घर लाने के लिए ठाकुरबारी पहुँचे। पर महंत ने कहाकि आज हरिहर काका को ठाकुरबारी रहने दो। इनका मन बहुत अशांत है। रात को हरिहर काका के लिए तरह-तरह के व्यंजन व मिष्ठान्न बनाए गए। एक ही रात में हरिहर काका ने ठाकुरबारी में जो सुख, शांति और संतोष पाया, वैसा उन्होंने जीवन में कभी नहीं पाया था।

हरिहर काका ठाकुरबारी से वापस आ गए। घर में उनकी अब खातिरदारी होने लगी। उनके भाई निवेदन करने लगे कि काका को अपनी जमीन भाइयों के नाम कर देनी चाहिए। हरिहर काका चाहे अनपढ़ थे, परंतु समझते थे। वह अपने जीते-जी अपनी जमीन न अपने भाइयों के नाम करेंगे न ठाकुरबारी के नाम, क्यों कि वे जानते थे कि गाँव में जिसने भी अपनी जमीन जीते-जी अपने उत्तराधिकारियों को लिख दी, उनकी स्थिति धोबी के कुत्ते जैसी हो गई थी।

महंत द्वारा हरिहर काका का अपहरण : महंत ने हरिहर काका को समझाने की बहुत कोशिश की। जब महंत हरिहर काका को मनाने में असफल रहे, तो उनके साथियों ने हरिहर काका का अपहरण कर लिया।

पूरा गाँव जाग गया। हरिहर काका के भाइयों को महंत पर संदेह था वे लोग ठाकुरबारी पहुँचे और ठाकुरबारी का फ़ाटक पीटने लगे। बदले में उन पर पत्थर गिरने लगे और फायरिंग होने लगी। गाँव के लोग तो भाग गए, केवल काका के भाई रह गए। उन्होंने पुलिस की सहायता लेने का निश्चय किया।

ठाकुरबारी में महंत व उसके कुछ विश्वासपात्र साधुओं ने सादे और लिखे कागजों पर जबरदस्ती उनके अंगूठे के निशान लिए। हरिहर काका के भाई पुलिस को लेकर ठाकुरबारी पहुँचे। एक दरोगा और आठ जवानों ने ठाकुरबारी को घेर लिया। पुलिस इंचार्ज ने ठाकुरबारी का फ़ाटक खोलने व आत्मसमर्पण करने का आदेश दिया। एक वृद्ध साधु ने ठाकुरबारी का फ़ाटक खोला। उससे जब महंत व अन्य साधुओं के बारे में पूछा गया, तो वृद्ध ने कहा- उसे कुछ नहीं पता।

पुलिस इंचार्ज के नेतृत्व में ठाकुरबारी की तलाशी शुरू हुई। वहाँ न महंत मिले और न साधु। हरिहर काका का भी कुछ पता नहीं चला। हर कमरे के देखने के बाद वह एक ताला लगे कमरे में मिले। उनके हाथ-पैर व मुँह बाँध रखे थे। महंत के खिलाफ हरिहर काका ने बयान दिया।

हरिहर काका के भाई व महंत एक जैसे : ठाकुरबारी से आकर हरिहर काका अपने भाइयों के साथ रहने लगे। हरिहर काका की सुरक्षा बढ़ा दी गई। बार-बार हरिहर काका को समझाया जाने लगा कि उन्हें अपनी जमीन अपने भाइयों को लिख देनी चाहिए। हरिहर काका ने सोच लिया था कि वह अपनी जमीन अपने जीते-जी किसी को नहीं देंगे, नहीं तो उनकी स्थिति वैसी

ही हो जाएगी जैसी रमेसर की विधवा की हुई। रमेसर के भाइयों ने उससे जमीन अपने नाम लिखवा ली तथा उसे दूध की मक्खी की तरह निकाल कर फेंक दिया।

बार-बार समझाने पर भी जब हरिहर काका नहीं माने, तो उन्होंने हरिहर काका को खूब मारा-पीटा, जबरदस्ती उनके अंगूठे के निशान लिए और उनके हाथ-पैर बाँधकर एक कमरे में डाल दिया।

इसकी सूचना महंत को भी मिल गई। वह पुलिस के साथ हरिहर काका के भाइयों के घर पहुँचा। घर की तलाशी ली गई और हरिहर काका ठाकुरबारी से भी बुरी स्थिति में मिले। अपने भाइयों के खिलाफ हरिहर काका ने बयान दिए तथा पुलिस से सुरक्षा माँगी।

विभिन्न घटनाओं का हरिहर काका पर प्रभाव : महंत व अपने भाइयों के बुरे व्यवहार से परेशान होकर हरिहर काका ने पुलिस से सुरक्षा ले ली। हरिहर काका की सुरक्षा के लिए चार जवान तैनात कर दिए गए। अब हरिहर काका बिल्कुल मौन हो गए। एक नेताजी चाहते थे हरिहर काका की जमीन पर हरिहर काका के नाम स्कूल खोल दिया जाए। इससे गाँव का विकास होगा। पर काका अब किसी की सुनने वाले नहीं थे।

तरह-तरह की अफवाहें गाँव में फैलती रहती। गाँव में दो दल बन गए। एक दल चाहता था कि हरिहर काका की जमीन ठाकुरबारी को मिलनी चाहिए, तो दूसरा दल चाहता था कि जमीन उनके भाइयों को मिलनी चाहिए। तरह-तरह की खबरें गाँव में फैलती रहती। हरिहर काका अब बिल्कुल मौन थे।

प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1) कथावाचक और हरिहर काका के बीच क्या संबंध है और इसके क्या कारण हैं?

उत्तर: कथावाचक हरिहर काका के प्रति आसकित रखता था। इस आसक्ति के व्यावहारिक व वैचारिक कारण थे। उनमें से दो कारण थे: हरिहर काका लेखक के पड़ोसी थे तथा उनके कोई संतान नहीं थी। वह लेखक को पुत्र की तरह प्रेम करते थे। जब लेखक बड़े हुए तो हरिहर काका उनके पहले मित्र बने। हरिहर काका की इतनी गहरी दोस्ती किसी से नहीं हुई थी। लेखक से वे कुछ भी नहीं छुपाते थे, अर्थात् दोनों के बीच में घनिष्ठ संबंध थे।

प्रश्न 2) हरिहर काका को महंत और अपने भाई एक ही श्रेणी के क्यों लगने लगे?

उत्तर: महंत और हरिहर काका के भाई उनकी जमीन हथियाना चाहते थे। दोनों ने पहले काका को समझा-बुझाकर जमीन अपने नाम करवाने की कोशिश की। जब हरिहर काका नहीं माने, तो पहले महंत ने उनका अपहरण कर लिया। जबरदस्ती उनके अंगूठे के निशान लिए तथा उनके हाथ-पैर बाँधकर एक कमरे में पटक दिया। उनके भाइयों ने भी यही किया। जब हरिहर काका किसी भी तरह जमीन अपने भाइयों के नाम लिखने के लिए तैयार नहीं हुए, तो उन्होंने भी हरिहर काका को मारा-पीटा, जबरदस्ती उनके अंगूठे के निशान ले लिए। इसीलिए हरिहर काका को महंत व अपने भाई एक ही श्रेणी के लगे।

प्रश्न 3) ठाकुरबारी के प्रति गाँव वालों के मन में अपार श्रद्धा के भाव हैं। उससे उनकी किस मनोवृति का पता चलता है?

उत्तर: ठाकुरबारी के लोग धार्मिक व श्रद्धालु प्रवृत्ति के थे, इसलिए उनकी ठाकुरबारी में अपार श्रद्धा थी। किसी भी शुभ कार्य की शुरुआत तीज-त्यौहार की शुरुआत ठाकुरबारी से होती। नई फसल आने पर ठाकुरबारी का हिस्सा भी निकाला जाता। कोई मन्नत पूरी होने पर लोग ठाकुरबारी को रुपए, पैसे, जेवर, अनाज चढ़ाते। कृषि कार्य से बचे हुए समय को लोग ठाकुरबारी में ही बिताते। ठाकुरबारी के साधु-संतों के प्रवचन सुनकर लोग अपने जीवन को सार्थक समझते। लोगों को लगता कि ठाकुरबारी में प्रवेश करते ही उनके सारे पाप धुल गए हों।

प्रश्न 4) अनपढ़ होते हुए भी हरिहर काका को दुनिया की बेहतर समझ है। स्पष्ट करें।

उत्तर- हरिहर काका चाहे अनपढ़ थे, पर उन्हें दुनिया की बेहतर समझ थी। महंत बार-बार कह रहा था कि अपने परलोक को सुधारने के लिए हरिहर काका को अपनी जमीन ठाकुरबारी के नाम लिख देनी चाहिए। दूसरी तरफ हरिहर काका के भाई चाहते थे कि हरिहर काका को जमीन उनके नाम लिखनी चाहिए। हरिहर काका ने सोच लिया था कि वह अपने जीते जी जमीन किसी के नाम नहीं करेंगे। गाँव के जिन लोगों ने अपनी जमीन जायदाद अपने रिश्तेदारों के नाम लिख दी थी, उनकी स्थिति धोबी के कुत्ते जैसी हो गई थी। अतः उन्होंने सोच लिया था कि वे अपने जीते जी अपनी जमीन किसी को नहीं देंगे।

प्रश्न 5) हरिहर काका को जबरन उठा ले जाने वाले कौन थे? उन्होंने उनके साथ कैसा बर्ताव किया?

उत्तर- हरिहर काका को जबरन उठाकर ले जाने वाले मंदिर के महंत और उसके साधु संत थे। महंत कई दिनों तक हरिहर काका को समझाता रहा कि उन्हें अपनी जमीन मंदिर के नाम कर देनी चाहिए। परंतु जब काका ने बहुत समझाने के बाद भी जमीन ठाकुरबारी के नाम नहीं लिखी, तो उन्होंने काका को जबरन उठा लिया। काका के अंगूठे के जबरदस्ती निशान कई कोरे कागजों व दस्तावेजों पर ले लिए। इसके बाद उनके हाथ-पैर बाँधकर व मुँह में कपड़ा ठूँस कर एक कमरे में बंद कर दिया। पुलिस की सहायता से हरिहर काका के भाइयों ने उन्हें बरामद किया।

प्रश्न 6) हरिहर काका के मामले में गाँव वालों की क्या राय थी और उसके क्या कारण थे?

उत्तर- हरिहर काका के मामले में गाँव में दो तरह के विचार थे। पहला विचार रखने वाले वे लोग थे जो सुबह शाम प्रसाद के नाम पर तरह-तरह के व्यंजन खाते और साधु महंत की भाषा बोलते। उनका मानना था कि हरिहर काका को अपनी जमीन ठाकुरबारी के नाम लिख देनी चाहिए। दूसरी ओर प्रगतिशील विचारों के लोग थे, जो खेती का काम करते थे। उन्हें लगता था कि हरिहर काका को अपनी जमीन अपने भाइयों के नाम कर देनी चाहिए, घर की जमीन घर में ही रहनी चाहिए।

प्रश्न 7) कहानी के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि लेखक ने क्यों कहा कि अज्ञान की स्थिति में ही मनुष्य मृत्यु से डरते हैं, ज्ञान होने के बाद तो आदमी आवश्यकता पड़ने पर मृत्यु को वरण करने के लिए तैयार हो जाता है।

उत्तर- यह सत्य है कि अज्ञान की स्थिति में ही मनुष्य को मृत्यु से डर लगता है, ज्ञान की स्थिति में नहीं। हरिहर काका जानते थे कि अभी तो उन्होंने अपनी जमीन किसी के नाम नहीं की, तब उसके साथ दुर्व्यवहार किया जा रहा है। अच्छा खाने को नहीं मिल रहा। बीमारी में कोई देखभाल करने वाला नहीं है। अगर उन्होंने अपनी जमीन किसी के नाम लिख दी, तो वे जीते जी हर रोज मरेंगे, जैसे रमेसर सिंह की विधवा से जमीन उसके भाइयों ने लिखवा ली। आज वह दो जून खाने के लिए भी तरसती है। इसीलिए हरिहर काका अपने जीते जी अपनी जमीन किसी को नहीं देना चाहते थे।

प्रश्न 8) समाज में रिश्तों की क्या अहमियत है? इस विषय पर अपने विचार प्रकट कीजिए।

उत्तर- समाज में रिश्तों की बहुत अहमियत है, क्योंकि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। मनुष्य समाज में एक दूसरे से रिश्तों के सहारे ही जुड़ा रहता है। सुख दुख में यह रिश्ते ही हमें अपने पराए में भेद कराते हैं। रिश्तों के कारण ही समाज में व्यक्ति को मान-सम्मान मिलता है। कभी रिश्तों में मनमुटाव भी आ जाता है, पर रिश्ते टूटते नहीं, अवसर आने पर फिर तरोताजा हो जाते हैं।

प्रश्न 9) यदि आपके आसपास हरिहर काका जैसी हालत में कोई हो, तो आप उसकी किस प्रकार मदद करेंगे?

उत्तर- अगर हमारे आसपास हरिहर काका जैसी हालत में कोई व्यक्ति होता, तो हम उसकी कुछ इस प्रकार मदद करते :-

1) उनसे प्रतिदिन मिलने की कोशिश करते, उनसे इधर-उधर की बातें करके उनका ध्यान बाँटने की कोशिश करते।
2) कोई एनजीओ तलाशते, जो हरिहर काका जैसे लोगों को सुरक्षा प्रदान करते हैं।
3) शहर में उनके रहने की व सुरक्षा की व्यवस्था करते, जिससे वे गाँव के माहौल से दूर जा सकें और यहाँ की परिस्थिति को भुला सकें।
4) त्योहारों पर उनसे विशेष रूप से मिलते और त्यौहार उनके साथ मनाते।
5) उनके लिए उन चीजों की व्यवस्था करते, जो उन्हें अच्छी लगती तथा हर उस चीज से दूर रखते, जो उन्हें पुराने दिनों की याद कराती।

VASUNDHARAHINDI.COM

प्रश्न 10) हरिहर काका के गाँव में यदि मीडिया की पहुँच होती, तो उनकी क्या स्थिति होती? अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर: मीडिया में बहुत शक्ति होती है। समय पर मीडिया अपनी शक्ति का प्रदर्शन करके समाज की अव्यवस्था को दूर कर देता है। अगर गाँव में मीडिया होता, तो हरिहर काका के साथ न तो महंत और न ही काका के भाई दुर्व्यवहार करने की हिम्मत करते। हरिहर काका के साथ जो हुआ, उसे मीडिया के द्वारा जल्दी से प्रसारित किया जा सकता था। ऐसे में कई समाजसेवी संस्थाएँ हरिहर काका को सुरक्षा देने के लिए सामने आ जाती।

प्रश्न 11) पुजारी द्वारा हरिहर काका के घर की बातें सुनकर ठाकुरबारी के महंत के कान खड़े हो जाने को आप उस की किस प्रवृत्ति का द्योतक मानते हैं? ऐसी स्थिति में आपकी समझ में उनका क्या कर्तव्य होना चाहिए था?

उत्तर: पुजारी जब हरिहर काका के घर में था और उसने देखा कि हरिहर काका भोजन के लिए घरवालों को खरी-खोटी सुना रहे थे, तो वह वहाँ से सीधे महंत के पास पहुँचा और पुजारी ने महंत को सारा किस्सा सुनाया। पुजारी की बात सुनते ही महंत की बाँछें खिल गई। उसे लगा कि हरिहर काका को बहला-फुसलाकर उसकी सारी जमीन ठाकुरबारी के नाम की जा सकती है। महंत ने किया भी यही, वह हरिहर काका को ठाकुरबारी ले आया। एक ओर उसने उसके आराम व अच्छे खाने-पीने की व्यवस्था की और दूसरी ओर उसे बहलाने फुसलाने लगा, जिससे हरिहर काका जमीन ठाकुरबारी के नाम कर दें। जब हरिहर काका महंत की बातों में नहीं आए, तो उसने हरिहर काका का अपहरण भी किया, जबरदस्ती उनके अंगूठे के निशान भी लिए। इससे पता चलता है कि वह एक स्वार्थी व्यक्ति है, धन का लालची व्यक्ति है।

हमारी समझ के अनुसार महंत हरिहर काका के घर के सदस्यों को समझाता। उन्हें बताता कि उन्हें हरिहर काका की सेवा करनी चाहिए, जमीन तो उन्हें मिल ही जाएगी। हरिहर काका के दुख को दूर करने का यत्न करता, न कि बढ़ाने का।

प्रश्न 12) हरिहर काका ने ठाकुरबारी जैसी संस्था में ही रहना प्रारंभ कर दिया था, जबकि उनका प्रिय स्थान तो उनका अपना घर था। क्यों? उनके परिवार के लोगों के व्यवहार के प्रति अपने विचार व्यक्त करके बताइए कि आप उनमें से एक होते तो क्या करते?

उत्तर: हरिहर काका की न पत्नी थी और न बच्चे। वह अपने भाइयों के साथ रहते थे। उनके घर को ही अपना घर समझते थे। घर में धीरे-धीरे उनका सम्मान कम हो रहा था। एक दिन जब हरिहर काका के भतीजे का दोस्त घर में आया और घर में अच्छा खाना बना, परंतु हरिहर काका को वही रूखा सूखा खाना मिला। इससे गुस्सा होकर हरिहर काका ने खाने की थाली फेंक दी।

हरिहर काका के गुस्से का लाभ उठाकर ठाकुरबारी का महंत उन्हें बहला-फुसलाकर ठाकुरबारी ले गया और हरिहर काका ठाकुरबारी में रहने लगे।

अगर हम घर के सदस्यों में से एक होते, तो घर के अन्य लोगों को समझाते कि हरिहर काका का सम्मान करना हमारा कर्तव्य है। जमीन हमारी हो या ना हो, पर अपने बड़ों का सम्मान करना ही हमारा कर्तव्य है। केवल इतना ही नहीं हरिहर काका के साथ हम बातें करते, और उनका मन बहलाते।

प्रश्न 13) आम आदमी की धर्म के प्रति अंधश्रद्धा को धर्म के ठेकेदार किस रूप में भुनाते हैं? हरिहर काका किस प्रकार इसका शिकार हुए? व्यक्ति का वैज्ञानिक दृष्टिकोण उसे किस प्रकार बचा सकता है?

उत्तर: आम आदमी धर्म के प्रति अंधी श्रद्धा रखता है। धर्म के ठेकेदार अर्थात् महंत, पुजारी आदि धर्म के नाम पर तरह-तरह के भय लोगों को दिखाते हैं और धर्म के नाम पर अपनी जेब भरते हैं तथा लोगों को तरह-तरह की पूजा-पाठ आदि में उलझाते हैं।

हरिहर काका जब घरवालों से नाराज हो गए, तो मंदिर का महंत उन्हें ठाकुरबारी ले गया और हरिहर काका को वह समझाने लगा कि जमीन ठाकुरबारी के नाम करने पर जीते-जी उन्हें मान-सम्मान तो मिलेगा ही, उन्हें युगों तक याद किया जाएगा तथा उनका परलोक भी सुधर जाएगा।

यदि व्यक्ति का दृष्टिकोण वैज्ञानिक हो, तो व्यक्ति अंधविश्वासों से दूर रहता है तथा धर्म के ठेकेदार उसका फायदा नहीं उठा पाते।

प्रश्न 14) आप कैसे कह सकते हैं कि हरिहर काका संयुक्त परिवार के मूल्यों के प्रति एक समर्पित व प्रेरक मानव थे? स्पष्ट करें।

उत्तर: हरिहर काका संयुक्त परिवार के प्रति समर्पित थे। हरिहर काका चार भाई थे। सभी एक ही घर में रहते थे। उन्होंने कभी भी अपनी जमीन से आने वाली उपज को अलग नहीं रखा, वह घर के ही काम आती थी। हरिहर काका के भाई जब हरिहर काका के साथ दुर्व्यवहार करने लगे, तब भी वे सोचते थे कि वह अपने जीते-जी अपनी जमीन अपने भाइयों को नहीं देंगे, परंतु उनकी मृत्यु के बाद उनकी जमीन उनके भाइयों को ही मिलनी चाहिए, ऐसा वे सोचते थे। अर्थात हम कह सकते हैं वास्तव में ही काका संयुक्त परिवार के मूल्यों के प्रति समर्पित मानव थे।

प्रश्न 15) हरिहर काका ने लेखक से किस विषय पर चर्चा की? इस चर्चा का क्या परिणाम निकला?

उत्तर: हरिहर काका के भाई जब उन पर दबाव डाल रहे थे कि काका को जमीन उनके नाम लिख देनी चाहिए, तब हरिहर काका ने लेखक से इस विषय पर चर्चा की और इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि हरिहर काका को अपने जीते-जी अपनी जमीन किसी को नहीं देनी चाहिए, चाहे वह महंत हो या काका के भाई।

काका को वो लोग याद आए, जिन्होंने अपने जीते-जी अपनी जमीन अपने उत्तराधिकारियों या अन्य किसी को लिख कर दी और अब वह लोग कुत्ते का जीवन जी रहे हैं।

इस चर्चा के बाद हरिहर काका ने अपनी जमीन किसी के नाम नहीं लिखी।

*****

VASUNDHARAHINDI.COM